"हिन्दी गजल का विकास भाषिक और सांस्कृतिक दृष्टि से"

प्रा. डो. भारमल पी. कणबी
श्री यु. एच. चौधरी आर्टस कोलेज,
वडगाम, जि. बनासकांठा

हिन्दी काव्य में समय-समय पर भाव एवं शिल्पगत परिवर्तन हुए ह, तो इसका कारण पाश्चात्य प्रभाव है । हिन्दी में 'सोनेट' आया । इसी तरह 'गजल' भी आई और विषयगत परिवर्तन हुए । आज हिन्दी में 'गजल' ने लोकप्रियता हासिल कर रही है । इसका कारण नई कविता का लयहीन होना भी है । हिन्दी में दोहा, गीत,नवगीत, गजल आदि लौटकर आना इसका प्रमाण है ।

'गजल' शब्द मूलरुप से उर्दू का है । जिसका प्रयोग उर्दु की एक विशेष पकारकी कविता के लिए किया जाता है । इन कविताओं का उर्दू में भाववस्तु प्रेम था । हिन्दी में आने के बाद यह प्रवृत्तिगत रुप से भावदृष्टि से भिन्न हो गई । इस परिवर्तन का कारण भाषा और संस्कृति दोनों है । क्योंकि संस्कृति भाषा की सहचरी है और देशकाल एवं परिस्थिति इनके मिश्रण के कारण है । 'गज़ल' प्रेम के एकांत से संघर्ष करते हुए एवं पीडा झेलते आमआदमी के विस्तृत धरातल पर लाई । गज़ल सिर्फ गोष्ठी का विषय न रहकर,रंगीन मिजाज लोगों का शौक न रहकर विस्तृत जन-समुदाय के बीच आई और जनसमुदाय की आवाज बनी । इसलिए मंजर भोपाली जैसे गज़लकार अपने अलगाव की घोषणा भी करता है -

"जुल्फो रुख के साये में जिंदगी गुजारी है
धूप भी हमारी है और छाँव भी हमारी है ।
बाप बोझा ढोता था दहेज क्या दे पाता
इसलिए वो शहजादी आज तक कुँवारी है ।"

हमारे देश में सर्वप्रथम ग़ज़ल की रचना करनेवाले सूफी संत ख्वाजा मुईनुददीन चिस्तो थे एसा माना जाता है । हिन्दी कवियों में भारतेंन्दु बाबू ने खड़बोली में गज़ल कही, जो उर्दू से तालमेल खाती है । जयशंकर प्रसाद की 'भूल' कविता इसी पद्धति की है । 'निराला' अैार 'दिनकर' ने भी गज़ल की शैली की कविताएँ लिखीं । हिन्दी गज़ल को विभिन्न कवियों ने स्थापित करन के लिए अनेक संज्ञाएँ दी- जैसे अनुगीत, गीतिका, गज़लिका आदि । हिन्दी गज़ल के विकास में दुष्यंत कुमार का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है । उनका संग्रह 'साये में धूप' बहुत ही प्रसिद्ध हुआ । दुष्यंत कुमार के बाद बलवीर सिंह 'रंग', 'गोपालदास' 'निरज', 'कुँअर बैचेन", चंद्रसेन विराट', यश मालवीय, दिनेश शुक्ल, जहीर कुरेशी आदिने हिन्दी गज़ल को नए सांस्कृतिक एवं भाषिक धरातल पर लाकर उसे नई पहचान दी है ।

हिन्दी गज़ल अपने आरंभ से आज प्रवृत्तिगत रुप से भिन्न हुई है । वशिष्ठ अनूप के शब्दों में -

"कल गुफ्तगू थी हुस्न और इश्क की मगर
भुखी जमात की पुकार आज है गज़ल ।
वह दर्द जो होंठों पे तड़पकर ही रह गया
उसी दर्द की गर्जन भरी आवाज है गज़ल ।"

जहीर कुरेशी तो लेखन की अनिवार्य शर्त ही संघर्ष मानते हुए कहते हैं -

"जिस कविताने अच्छा लिखा, विपदाओं के बीच ।
उसका लिखना रुक गया, सुविधाओं के बीच ।"

आज हिन्दी गज़ल में भारतीय संस्कृति की सुगंध बस रही है अैार उसका परिधान हिन्दी का हो रहा है । उसके उपमान और प्रतिक भारतीय होने की वजह से वह हिन्दी काव्य जगत में हिलमिल रही है । "गज़ल आज अपनी परंपरागत मान्यताओं हुश्न और इश्क तथा प्रेमी और प्रेमिका के बीच के मधुर वार्तालाप और

प्रेम निवेदन तक सीमित न रहकर अन्य विधाओं की भाँति जिंदगी की धड़कनों से स्पंदित और जीवन-जगत की जटिल समस्याओं से आँखे चार करती दिखाई पडती है । इसमें कृष्ण की बंशी की धुन मंद और शिव के डमरु का स्वर तीव्र सुनाई पडता है ।"[1]

हिन्दी गज़ल में अरबी - फारसी शब्दावली का प्रयोग भी हुआ है । हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार वे शब्द ढल गये हैं । हिन्दी गज़ल में शामो-सहर का शाम और शहर तथा दिले-नादां का नादान दिल आदि । जैसे अंग्रेजी के अनेक शब्दों का हिन्दीकरण हो गया है - टिकटें, टेबिलें आदि । वैसे ही उर्दू भी हिन्दी से संस्कारित हो रही है । हिन्दी गज़ल में संस्कृत की तत्सम शब्दावली के प्रयोग के साथ हिन्दुस्तानी रूप भी दिखाई देता है । कुछ आंचलिक बोलियों में गज़ल लिखी जाने लगी है । हिन्दी कविता की भाँति हिन्दी गज़ल में भी भारतीय मिथकों, कहावतों- मुहावरों का प्रयोग हुआ है । संवेदना के धरातल पर हिन्दी गज़ल ने अपना आँचल बहुत विस्तृत किया है ।

समयकालीन हिन्दी कविता का भाव और विचारगत वैविध्य हिन्दी गज़ल में भी आ गया है । राष्ट्रीय परिवेश हो या अंतराष्ट्रीय, सामाजिक समस्या हो या धार्मिक तथा भ्रष्ट्राचार, पर्यावरण, गाँव-शहर, मजदूर-मालिक या आम आदमी सभी हिन्दी गज़ल का विषय बने और बन रहे हैं । एक ओर प्रेम की विकृति या छल उसका विषय है, तो दूसरी ओर गरीबी और ऋण के बोझ के दबे देश के किसान भी उसमें स्थान पा सके है । आजादी की लडाई से लेकर आज तक हिन्दी गज़ल में हिन्दुस्तान का परिवेश साफ-साफ बोलता दिखाई देता है । शमशेर का एक शेर दृष्टव्य है -

"जहाँ में अब तो जितने रोज अपना जीना होना है,
तुम्हारी चोटें होनी है हमारा सीना होना है ।"

"शमशेर से पूर्व कवियों ने हिन्दी में गज़ल लिखने का प्रयास भर किया । जहाँ से (निराला) उर्दू प्रधान गज़लों के द्वारा इस भाषा संबंधी अपनी जानकारी और क्षमता

को प्रकट करते है; यहा दूसरी और हिंदी पाठकों को एक नई छंद-शैली भी भेंट करते है, जिसमें संस्कृत की पदावली उर्दू पदों के साथ जूडी हुई है ।"[2]

हिन्दी गज़ल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर शमशेर हैं, जिनसे सीधी प्रेरणा दुष्यंतकुमार ने ग्रहण की है । उनके बाद ही हिन्दी में ठीक से गज़ल लिखना प्रारंभ हुआ है । आज पत्रिकाओं में हिन्दी गज़लें पढने को मिल रही है, नई कविता के कवियों ने इस ओर जोर दोया है । इन में रामदरश मिश्र, शेरजग गर्ग उल्लेखनीय हैं । निराला ने 'कुकुरमुत्ता' में और पंत ने 'ताज' में वर्ग-भेद की जिस पीडा को व्यक्त किया है, वही दुष्यंत कुमार की गज़ल में सामने आई -

"बाढ़ की संभावनाएँ सामने हैं
और नदियों के किनारे घर बने है ।
आपके कालीन देखेंगे किसी दिन
इस समय तो पाँव कीचड़ में सने है ।
अब तड़पती-सी गज़ल सुनाए कोई
हम सफर अँधे हुए है, अनमने है ।"

इस प्रकार हिन्दी गज़ल में जिंदगी की बेबसी, घुटन, भागम-भाग साफ दिखाई देती है । वह वर्तमान अव्यवस्था के धरातक पर खड़ी हुई अपने अतीत से बराबर उपकृत है । कवि जहीर कुरेशी मानते है कि - "वह कोठों पर गाई जानेवाली संगीतोन्मुख गज़ल नहीं, बल्कि खेतों, दफ्तरों, कारखानों में काम करते रफ-टफ लोगोंकी भावनाओं की निर्मल अभिव्यक्ति है ।"[3] कला सिर्फ कला के लिए नहीं बल्कि कला जीवन के लिए है । गज़ल सिर्फ लिखने के लिए लिखी जाये तो वह प्रभावशाली नही होगी ।

हिन्दी गज़ल अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रुपक, संदेह, मानवीकरण आदि अलंकारों से युवत भाषा-सौष्ठव एवं अपनी लाक्षणिक व्यंजना से समृध्ध बन रही है । भारतीय प्राकृतिक प्रतीक एवं कथानक रुढियाँ सहज रुप से हिन्दी गजल में आए हैं-

(1) ''देखकर अफसोस होता है बहुत,
फूल कांटो की शरण है इन दिनों ।''[4]

(2) ''कौन कहता था कि वो टूटेगा मेरी ही तरह,
जो वचन होंठो पे उसके बनके ध्रुवतारा रहा ।''[5]

(3) '' हो गई है पीर पर्वत सी, पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।'' [6]

हमारे देश में खाद्य पदार्थो में मिलावट, झूठ और अमानवीयता के चरम को व्यस्त करते हुए कहा है ।

'' झूठ के बल पै वकील एसी सफाई देगा,
जज भी अपराधी को इज्जत से रिहाई देगा ।
अब मिलावट की कला हो गई इतनी उन्नत
दूध नकली हो मगर खूब मलाई देगा ।''[7]

व्यक्ति को सत्ता मे मदमाते देख चंद्रसेन विराट ने नेताओं पर व्यग्य करते हुए सरल एवं लोकबोली मे शेर लिखे है -

(1) '' पद का पर्वत, शिर धरे हैं
तीनों लोगो से न्यारे हैं
शब्द ठेठ देहाती उनके
नखरे अंगरेजी सारे है ।''[8]

(2) ''जो हमें ही रौंद दे, वे श्वेत हाथी
और मत शामिल करो ऐरावतो में ।'' [9]

हिन्दी गज़लो मे तीज-त्यौहारों का वर्णन या संकेत भारतीय जमीन से जोडकर अपनी भाषा में बात कहने का साक्षी है-

''ऊपर उठकर क्या मिला, वायुयान से पुछ
उडने वालों की व्यथा आसमान से पुछ ।
होत आखातीज पर लाखों बाल-विवाह
कानूनों की दुर्दशा, संविधान से पूछ ।'' [10]

इस प्रकार आज हिन्दी गज़ल हिन्दी काव्य-जगत में अपनी संपुर्ण उपस्थिति दर्ज करा रही हे । वह अमीर-गरीब की खाई को कम करने की कोशिश कर रही है,गज़ल आज बेरोजगारीकी आवाज है, उसे बाजारवाद एवं वैश्वीकरण की चिंता है,वह जाति एवं संप्रदायगत एकता एवं समभाव तथा विकास की बात करती है ।

संदर्भ :-

(1) नचिकेता : तर्जनी, संपा. छंदराज अनिरद्व सिन्हा, पृ-18

(2) डो. अनुप वशिष्ठ : हिंदी गजल का स्वरुप और महत्वपूर्ण हस्ताक्षर, पृ-40

(3) जनसत्ता, सबरंग : (गजलकार जहीर कुरेशी से अमरेंद्रकुमार की बातचीत) 2 दिसम्बर, 2007.

(4) चंद्रसेन विराट : धार के विपरीत, पृ-45

(5) कुँअर बैचेन : पत्थर की बांसुरी, पृ-43

(6) दुष्यंतकुमार : सांये में धूप, पृ-30

(7) डो. सादिक समावर्तन, करवटी- 2009, पृ-64

(8) चंद्रसेन विराट : परिवर्तन की आहट, पृ-35

(9) चंद्रसेन विराट : धार के विपरीत, पृ-32

(10) जहीर कुरेशी : नई दुनिया, 16, मई-1993